मायथॉलॉजी, विज्ञान और समाज

विक्रम सोनी और रोमिला थापर

कुछ लोग मानते हैं कि आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कार प्राचीनतम भारतीयों को ज्ञात थे। इस बात के पीछे वैज्ञानिक प्रमाण लगभग नहीं है मगर यह दलील दी जा सकती है कि यह ज्ञान पांच हज़ार साल पहले अस्तित्व में था मगर सुरक्षित नहीं रखा गया था, अथवा हम इस बात से स्पष्ट रूप से इन्कार तो नहीं कर सकते कि ऐसा ज्ञान मौजूद था। लिहाज़ा हमें लगा कि इस दृष्टिकोण की थोड़ी छानबीन की जानी चाहिए।

जादुई यथार्थवाद

मायथॉलॉजी जादुई यथार्थ है, इस मायने में कि मायथॉलॉजी के ताने-बाने में कुछ तो यथार्थ होता है और काफी सारा जादू होता है। इस सबको दंतकथाओं में पारलौकिक वस्तुओं और पारलौकिक शक्तियों में गूंथा जाता है। मिथक मानव व्यवहार की अतियों, दुविधाओं, रवैयों और विरोधाभासों के भी द्योतक होते हैं। इनमें से कल्पना को निकाल दीजिए और ये कथाएं उबाऊ नसीहतों में बदल जाएंगी।

अब कल्पनाएं तो भरपूर हैं - हवा में उड़ते वाहन, दस सिर और अष्ट भुजाएं, तरह-तरह के यंत्र, जिन्हें आप चाहें तो विज्ञान-गल्प कह लीजिए या हाई-फाई उपकरण। वैसे ये सब मिथकीय अतीत के धरातल पर उर्वर कल्पना के आविष्कार हैं। इस मामले में हम किसी भी अन्य प्राचीन समाज से अलग नहीं हैं। क्या इसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक आविष्कार अतीत में मौजूद थे? यह हमें कल्पना की एक और उड़ान लगाने को विवश करता है कि हम यह विश्वास करें कि सारी काल्पनिक वस्तुएं दरअसल भौतिक रूप में विद्यमान थीं। और जब मिथक लोगों की आस्थाओं में प्रवेश कर जाते हैं तो मायथॉलॉजी धर्म से जुड़ जाती है।

निसंदेह, कल्पना एक ज़बर्दस्त सृजनात्मक ताकत रही है और आज भी है। और हमारे पास आज ऐसे मिथक हैं जो हमारी वर्तमान कल्पना के निचोड़ हैं। यदि हम जूल्स वर्न या आर्थर क्लार्क को पढ़ें तो हम छलांग लगाकर अंतरिक्ष की सैर के युग में पहुंच जाते हैं, यद्यपि यह हो सकता है कि उनके अंतरिक्ष बहुत अलग हों। या यदि जॉर्ज ओरवेल के उपन्यास *1984* को पढ़ें तो हम एक ऐसे युग में पहुंच जाते हैं जहां रोबोट व कंप्यूटर जैसे लोग तानाशाही पूर्ण तंत्र का संचालन करते हैं। ऐसी कल्पनाएं कभी-कभी भविष्य-दृष्टा भी साबित हुई हैं। मगर इनमें एक उल्लेखनीय अंतर है। यह कल्पना कभी-कभी भविष्य के प्रक्षेपित या अनुमानित यथार्थ से जुड़ती है, जबकि भारत में आज जो दावा किया जा रहा है, वह यह है कि कल्पना हमारे अतीत के यथार्थ से जुड़ी है। तो इसे समय के चक्र में कहां रखें - भविष्य में या अतीत में?

मायथॉलॉजी को मायथॉलॉजी की तरह ही पढ़ा जाना चाहिए। अर्थात इसकी अपनी एक समृद्ध व स्वतंत्र पहचान होती है। मिस्र, यूनान, भारत, चीन वगैरह के प्राचीन मिथक रचयिताओं ने मिथक में देवी-देवताओं और पारलौकिक किरदारों को शामिल देखा था। लिहाज़ा समझदारी यह होगी कि इसे इतिहास या विज्ञान मानने की भूल न की जाए। मिथक प्राचीन दंतकथाएं हैं, जबकि इतिहास उसकी बात करता है जो माना जाता है कि वास्तव में हुआ था। विज्ञान इसका एक हिस्सा है। इतिहास और विज्ञान के स्थान पर मायथॉलॉजी को रखना गलत है और कुछ लोग

कहेंगे कि मात्र ख्याली पुलाव है। यह बात प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के हाल के बयान में झलकी जब उन्होंने प्राचीन मायथॉलॉजी को वर्तमान विज्ञान से जोड़ा और दावा किया कि आजकल के सारे वैज्ञानिक आविष्कार हमने सुदूर अतीत में कर लिए थे।

स्वप्न बनाम यथार्थ

विज्ञान जानकारी और संग्रहित ज्ञान पर टिका होता है। इसके लिए ज़रूरी होता है कि जानकारी व ज्ञान का व्यवस्थित व तार्किक विश्लेषण किया जाए। किसी साक्ष्य को प्रमाण मानने से पहले उसकी सख्त जांच करनी होती है। ज़ाहिर है, यह प्रक्रिया कल्पना पर लागू नहीं होती।

आविष्कार कल्पना की क्षणिक छलांग नहीं होते। उनकी एक लंबी गर्भावस्था होती हैः वे कई चरणों और परीक्षणों से गुज़रते हैं और उसके बाद ही वायुयान जैसे किसी व्यावहारिक उत्पाद का रूप ले पाते हैं। अतीत की किसी भी मिथकीय रचना के संदर्भ में इस तरह की विकास प्रक्रिया का कोई प्रमाण नहीं है। यह सही है कि विज्ञान और टेक्नॉलॉजी, दोनों ही कल्पनाशीलता और आविष्कारों से सृजनात्मक स्फूर्ति प्राप्त करते हैं। अलबत्ता, ये मात्र कल्पनाओं पर आधारित नहीं हैं। यदि वैसा होता तो ये सपने ही रहते, यथार्थ नहीं बन पाते।

मौजूदा माहौल में यह प्रपोगंडा, जो अब आधिकारिक हो चला है, हमें जॉर्ज बुश और उन अमरीकियों से भी एक कदम आगे ले जाएगा जो जैव विकास के तथ्य से इन्कार करते हैं और उसकी बजाय इंटेलिजेंट डिज़ाइन में विश्वास करते हैं। इंटेलिजेंट डिज़ाइन की धारणा देवत्व के विचार से ओत-प्रोत है। वास्तव में ईश्वर के अत्यंत नज़दीक माने जाने वाले पोप तक ने अब स्वीकार कर लिया है कि जैव विकास एक तथ्य है।

लोग अपनी आस्थाओं को लेकर प्रायः अनभिज्ञ होते हैं क्योंकि आस्था की फितरत ही ऐसी है कि उस पर सवाल नहीं उठाए जाते। ऐसे लोगों की दुर्बलताओं का फायदा उठाना आसान है। इस तरह के वक्तव्य विश्वासी लोगों को अति-राष्ट्रवादी, गैर-तार्किक, विज्ञान-विरोधी राह पर मोड़ सकते हैं जहां अतीत के एक खास नज़रिए की छाप होगी। यह कहना कि वैज्ञानिक आविष्कार उस काल में भी मौजूद थे जब उन आविष्कारों के लिए ज़रूरी ज्ञान का कोई धरातल तक तैयार नहीं हुआ था, विज्ञान की वैधता को नकारने का एक तरीका है। यह तो तय है कि मायथॉलॉजी और धर्म आसानी से घुल-मिल जाते हैं। हम सभी धर्म और राजनीति के विस्फोटक सम्मिश्रण को लेकर चिंतित हैं। जब हम धर्म, राजनीति और विज्ञान के साथ मायथॉलॉजी को भी शामिल कर देते हैं, तो मोलोतोव के विस्फोटकों से भी एक कदम आगे जा रहे हैं। वह तो हमारी मंज़िल नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में....

स्रोत फरवरी 2015
अंक 313

- **बेदर्दी और बेरुखी के तीस साल**
- **हाईमास्ट प्रकाश से सोयाबीन फल-फूल नहीं सका**
- **क्यों हमारे वैज्ञानिक बोलते नहीं?**
- **सुंदरता के लिए कुरबान नहीं होंगे बेज़ुबान जीव**
- **गिद्ध सड़ा मांस कैसे खा लेते हैं?**